आधी आबादी

हर सन्डे वूमेन्स डे

संस्करण – रविवार, 02 जुलाई 2023, अंक – 08

विशेष संपादकीय

अपना ख़्याल रखना!

– चारुल मल्लिक

पूरे देश में मॉनसून झमाझम बरस रही है। ऐसे में महीनों बाद गर्मी से थोड़ी राहत मिली है। किसान से लेकर आम जन सभी इस मौसम में बेहद खुश हैं। मुंबई की बात करें तो यहाँ बारिश राहत के साथ-साथ थोड़ी आफ़त लेकर भी आती है। मुंबई की ट्रैफिक तो वैसे भी बदनाम है और ऐसे में अगर बारिश हो तो ट्रैफिक और भी थम जाती है। किसी भी बात की तरह बारिश के भी पॉजिटिव और नेगेटिव दोनों पहलू हैं। मुंबई में ऐसे कई लोग हैं जो आजादी के 75 साल बाद भी एक आसरे के लिए तरस रहे हैं। सड़क किनारे फुटपाथ पर रहने को विवश ये लोग आखिर कहाँ जायेंगे? उस पर अगर मूसलाधार बारिश हो तो फिर दृश्य और भी भयावह हो जाती है। सड़क किनारे रहने वाले इन लोगों में महिलाओं की आबादी भी कम नहीं। महिलाओं को ऐसे मौसम में कई संकटों से जूझना पड़ता है। हर महिला को अधिकार है कि वो एक गरिमा पूर्ण ज़िंदगी जी सके। लेकिन, बेघर महिलाओं के लिए यह आसान नहीं। सड़क किनारे आते-जाते न जाने इन महिलाओं को किस-किस की नजर छलनी करती रहती है। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी चीजों से भी वंचित ये महिलायें एक अलग तरह के संघर्ष की पटकथा लिख रही होती है। तेजी से एक असंवेदनशील समाज में बदल रहे हम लोग इन सबके बारे में सोच भी कहाँ पाते हैं? सरकारों को भी इतनी फुर्सत कहाँ? मीडिया भी ऐसे विषयों पर अब शायद ही कोई रिपोर्ट करता हो? तो यह बारिश ऐसी महिलाओं को काफी आतंकित करती है, जो बेघर हैं या फुटपाथ पर रहने को विवश हैं।

युवाओं को और हम सबको आगे आकर इन महिलाओं के लिए कुछ करना होगा। दिल्ली की तर्ज पर रैन बसेरे की व्यवस्था अगर हर बड़े शहर में की जा सके तो इससे बेहतर कुछ नहीं। मुंबई में एक अलग तरह का जज्बा है जो हमने अलग-अलग मौकों पर देखा भी है। इस बार मुंबाइकर क्या अपने-सपने स्तर से इन बेघर महिलाओं के लिए एक आशियाने की व्यवस्था कर सकेंगे? सवाल और संकट काफी बड़ा है। लेकिन, आधी आबादी संडे के अपने इस कॉलम के जरिए मैं आप सभी का ध्यान इस तरह खींचना चाहूँगी कि अपने-अपने स्तर से इन महिलाओं के लिए जो भी कर सकें जरूर करें और हमें aadhiaabadisunday@gmail.com पर इस बारे में जरूर बताएँ।

एसडीएम पत्नी ने दिया पति को धोखा, बेकार है ये बहस!

अमिताभ बच्चन की फिल्म सूर्यवंशम तो सभी को याद होगी। फिल्म में अमिताभ ने हीरा का किरदार निभाया था, जो अपनी पत्नी को पढ़ाकर अफसर बनाता है। मगर उत्तर प्रदेश में एक शख्स ने भी अपनी पत्नी को पढ़ाकर अफसर बना दिया लेकिन बदले में उसे जो मिला, उसकी कल्पना भी उसने कभी सपने में भी नहीं की होगी। प्रयागराज में पति-पत्नी से जुड़ा एक ऐसा मामला सामने आया है जो पूरे देश में चर्चा का विषय बन गया है। पत्नी से धोखाखाने के बाद अब पति ने ऑनलाइन में मीडिया से अपनी गुहार लगाई है। बता दे कि सफाईकर्मी पति का नाम आलोक मौर्या है, जो प्रतापगढ़ में तैनात है और उसकी पत्नि ज्योति मौर्या बरेली में एसडीएम पद पर तैनात है। पति का आरोप है कि उसकी पत्नी और उसका प्रेमी दोनों मिलकर उसकी हत्या की साजिश रच रहे हैं। आलोक ने बताया कि साल 2010 में उसकी वाराणसी के चिरई गांव की रहने वाली ज्योति से शादी हुई। ज्योति ने शादी

■ हीरेंद्र झा

के बाद आगे की पढ़ाई करने की इच्छा जताई। उसके बाद आलोक ने अपनी छोटी सी तनख्वाह में से पैसे काटकर उसकी पढ़ाई के लिए रुपये जोड़े। उन्होंने उसका दाखिला प्रयागराज के एक अच्छे कोचिंग सेंटर में कराया था। साल 2015 में जिस दिन उसके घर दो जुड़वा बेटियां हुईं, उसी दिन पीसीएस का रिजल्ट आया और ज्योति का सेलेक्शन पीसीएस में हो गया। पूरे घर में खुशी छा गई। उस समय ज्योति ने इसका श्रेय अपने पति आलोक मौर्य और ससुर को दिया। मगर आज पीसीएस पत्नी ज्योति ने अपने उसी पति और उसके परिवार वालों के खिलाफ दहेज मांगने, बदनाम करने और उत्पीड़न करने का आरोप लगाते हुए धूमनगंज थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। आलोक और ज्योति की शादीशुदा जिंदगी सही चल रही थी लेकिन इसी बीच साल 2020 में ज्योति की मुलाकात होमगार्ड कमांडेंट मनीष दुबे से हुई। ज्योति मनीष के करीब और अपने पति आलोक से दूर होती चली गई। पति आलोक मौर्य का आरोप है कि उसे अपनी पत्नी पर शक हुआ तो उसने मोबाइल चेक किया। इसमें मनीष दुबे, जोकि होमगार्ड कमांडेंट के पद पर तैनात है, के साथ उसकी पत्नी ज्योति मौर्य का ओपन चैट सामने आया। आलोक ने अपनी पत्नी को बहुत समझाने की कोशिश की थी लेकिन वो असफल रहा। इसके बाद उसने 22 फरवरी 2023 को सरकारी आवास पर पीसीएस पत्नी ज्योति और कमांडेंट मनीष दुबे को रंगे हाथों पकड़ लिया था। दोनों ने उसे जान से मारने के लिए दौड़ाया किसी तरह से भागकर उसने अपनी जान बचाई थी। उसके बाद ही उसकी पत्नी ने उसके खिलाफ झूठा केस दर्ज कराया है। ख़बर के बाद से ही सोशल मीडिया पर पब्लिक लगातार इस मसले पर अपनी राय दे ही है। बड़ा सवाल है कि क्या एक पत्नी को नये सिरे से प्यार करने का अधिकार नहीं? अगर हाँ तो फिर बहस किस बात की हो रही है।

इंटरव्यू

अब अपने फैसले मैं खुद लेना चाहती हूँ : तमन्ना

बॉलीवुड और साउथ फिल्मों की एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया इन दिनों दो वजहों से चर्चा में हैं। एक तो ये कि उनकी मूवी 'लस्ट स्टोरीज 2' ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज हो रही है। और दूसरा ये कि उनकी जिंदगी में प्यार ने दस्तक दी है। वो विजय वर्मा को डेट कर रही हैं और अपने रिलेशनशिप के फेज को खूब इंजॉय कर रही हैं। पढ़िए तमन्ना भाटिया से आधी आबादी की ये बातचीत।

सवाल- 'लस्ट स्टोरीज' के बाद आपको क्या लगता है कि औरतें अपनी सेक्सुएलिटी को लेकर मुखर होंगी?

तमन्ना- जब मैंने फिल्मों में काम करना शुरू किया, तब मैंने अपने पैरेंट्स से कहा था कि मैं कुछ-कुछ सीन्स नहीं करूंगी। उन्होंने मेरे करियर के शुरुआती दौर में मुझे बहुत सपोर्ट किया कि मैं ऐसी फिल्में करूं, जो फैमिली के साथ बैठकर देखी जा सकें। जैसे -जैसे वक्त गुजरता गया, फिल्मों को लेकर मेरी समझ परिपक्व हुई है। आज हम हर तरह की फिल्में देख रहे हैं। ये एक शुरुआत है कि हम हर तरह की कहानियां कह रहे हैं और औरत की सेक्सुएलिटी उसका एक अहम भाग है, तो वो कहानी के नेरेटिव में सहायक होगा। बशर्ते उसे सही तरीके से दर्शाया जाए। मुझ जैसी एक्ट्रेसेस अगर इस तरह के विषयों से जुड़ती हैं, तो निसंदेह एक नया नजरिया मिलता है। जो लोग इसे टैबू समझते हैं, फिर वे इसे हौवा नहीं समझेंगे।

सवाल- पहले नायिकाओं को ज्यादातर शो पीस या ओब्जेक्टिफाय किया जाता था, मगर अब वे बोल्ड और दमदार भूमिकाएं करने लगी हैं।

तमन्ना- मैं भी उसी माहौल में पली-बढ़ी थी, जहां मैं बोल्ड सीन वाली फिल्मों को परिवार के साथ देखने में कंफर्टेबल नहीं थी। अब कहीं न कहीं मैं भी इस सोच से ऊपर उठ गई हूं और उस तरह के दृश्यों में उतनी असहज नहीं होती।

सवाल- रजनीकांत के साथ आपकी 'जेलर' भी आएगी, एक अभिनेत्री के रूप में आप खुद को कितना संवरा हुआ पाती हैं?

तमन्ना- सबसे अच्छी बात ये है कि इस वक्त मैं इंडस्ट्री के उस दौर में हूं, जहां अभिनेत्रियों के लिए वो भेद मिट गया है कि वे एक उम्र के बाद उस तरह के रोल नहीं कर सकती। अभिनय के आगे के सफर को मैं अपने मनमुताबिक करना चाहती हूं। अब अपने फैसले मैं खुद लेना चाहती हूं।

सवाल- सोशल मीडिया पर कई बार आपको तारीफ मिलती है, मगर कई बार आप ट्रोल भी हो जाती हैं। कैसे हैंडल करती हैं?

तमन्ना- देखिए, आपको फूलों की माला पहननी है, तो आपको चप्पल भी बर्दाश्त करनी होगी। आपको अगर एक चीज चाहिए, तो दूसरी चीज के लिए तैयार रहना ही पड़ता है। ये सब मैंने दक्षिण की फिल्मों में काम करते हुए काफी अनुभव किया है, तो ट्रोल्स से मैं डरती नहीं। मैं सोशल मीडिया को एक अनोखा मीडियम मानती हूं। आप इसे जैसे चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं।

सवाल- लड़की होने के नाते आपको सबसे ज्यादा प्राउड कब महसूस होता है?

तमन्ना- कई बार, खास तौर पर तब जब हमारे देश की लड़कियां देश को विश्व पटल पर रीप्रेजेंट करती हैं। ऐस पहले भी होता था, मगर अब ग्लोबली विभिन्न क्षेत्रों में लड़कियों का प्रतिनिधित्व ज्यादा देखने को मिल रहा है।

हलचल

महिला पत्रकार को अश्लील संदेश भेजने के आरोप में पीडीपी नेता गिरफ्तार

केरल पुलिस ने पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) के नेता निसार मेथर को एक महिला पत्रकार को अश्लील संदेश भेजने के आरोप में शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया। महिला पत्रकार ने पार्टी के नेता अब्दुल नासिर मदनी की सेहत की जानकारी के लिए मेथर को संदेश भेजा था, जिसके जवाब में उसने कथित विवादित संदेश भेजा। पुलिस ने कहा कि पीडीपी के महासचिव निसार मेथर को आज गिरफ्तार किया गया और बाद में उसे जमानत पर छोड़ दिया गया। एक टीवी पत्रकार द्वारा पुलिस के पास शिकायत लेकर पहुंचने के बाद 29 जून को उनके खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। पुलिस ने बताया, "उसके (मेथर) पास से एक मोबाइल फोन जब्त किया गया है।" एक पुलिस अधिकारी ने 'पीटीआई-' को बताया, ''हमने भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 354ए(1)(4) और 354(1)(1) तथा केरल पुलिस अधिनियम की धारा 120(ओ) के तहत प्राथमिकी दर्ज की है।'' उल्लेखनीय है कि मदनी बीमार हैं।

दिल्ली मेट्रो में शराब ले जाने की छूट देने पर बवाल, महिला कार्यकर्ताओं ने किया विरोध

दिल्ली मेट्रो में यात्रा के दौरान यात्रियों को शराब की दो सीलबंद बोतलें साथ ले जाने की अनुमति देने के दिल्ली मेट्रो के कदम पर एक महिला कार्यकर्ता एनी राजा ने कहा कि दिल्ली मेट्रो परिसर के अंदर लोग शराब नहीं पीएंगे, यह सुनश्चित करना कठिन होगा और उन्होंने इस फैसले को वापस लेने की मांग की। हालांकि, पुलिस ने आश्वस्त किया है कि कड़ी निगरानी रखी जाएगी और अगर कोई ''हंगामा'' करते पाया जाएगा तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। दिल्ली मेट्रो के अनुसार, सीआईएसएफ और डीएमआरसी के अधिकारियों की एक समिति ने ट्रेनों में ले जाने की अनुमति वाली वस्तुओं की सूची की समीक्षा की है। संशोधित सूची के अनुसार, एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन के प्रावधानों के अनुरूप दिल्ली मेट्रो में प्रति व्यक्ति शराब की दो सीलबंद बोतलें ले जाने की अनुमति है। अधिकारियों ने कहा कि अगर कोई यात्री शराब के नशे में अभद्र व्यवहार करते हुए पाया जाता है, तो उसके खिलाफ कानून के प्रासंगिक प्रावधानों के तहत उचित कार्रवाई की जाएगी।

प्रेमिका ने महिला थाने में की दारोगा से शादी, पुलिसवाले बने बाराती

प्रेमी ने प्रेमिका की मांग भरी और जीवन भर के लिए पत्नी के रूप में अपना बना लिया। यह सब कुछ भागलपुर के महिला थाने में मंगलवार (27 जून) को हुआ। प्रेमिका ने अपने प्रेमी दारोगा से शादी की और इस दौरान पुलिसवाले बाराती के रूप में दिखे। एकचारी थाना के टपुआ के रहने वाले मनोज कुमार ने वंदना कुमारी (20 साल) से डॉ. भीमराव आंबेडकर को साक्षी मानकर शादी कर ली। प्रेमी मनोज कुमार वर्तमान में मुजफ्फरपुर में सब इंस्पेक्टर के पद पर है। महिला पुलिसकर्मियों ने ही प्रेमिका को दुल्हन की तरह सजाया और दूसरी तरफ एससी-एसटी थाने की पुलिस ने प्रेमी को दूल्हे की तरह तैयार किया। महिला थाने की पुलिस और एससी-एसटी थाने की पुलिस ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। शगुन के तौर पर दुल्हन को पैसे भी दिए गए। बताया जा रहा है कि वंदना कुमारी जब 16 साल की थी उसी समय से उसे मनोज से प्यार हो गया था। बाद में लड़के की नौकरी हो गई और वह शादी करने से इनकार करने लगा। लड़की वरीय पुलिस अधीक्षक, पुलिस अधीक्षक के कार्यालय का चक्कर लगाती रही। अंत में प्रेमी ने शादी के लिए हां किया और भागलपुर के महिला थाने में दोनों ने शादी कर ली।

स्पेन में अब स्विमिंग पूल में बिना कपड़ों के स्नान और खुलेआम स्तनपान करा सकेंगी महिलाएं

यूरोपीय देशों में महिलाओं को पुरुषों जैसे अधिकार देने की मुहिम छिड़ी हुई है। अब वहां स्पेन की सरकार ने स्विमिंग पूल में महिलाओं को टॉपलेस होकर नहाने की इजाजत दे दी है। इस फैसले के उपरांत वहां कैटेलोनिया क्षेत्र के स्विमिंग पूल में महिलाएं बिना कपड़ों के नहा सकेंगी। इतना ही नहीं, उनको पब्लिक प्लेस में ब्रेस्टफीडिंग कराने की भी मंजूरी दे दी गई है। बता दें कि अब तक अमेरिका, कनाडा, स्वीडन में महिलाओं को टॉपलेस होने की छूट मिल चुकी है। स्पेन में भी महिलाएं लंबे समय से इसकी मांग कर रही थीं। यहां पर 'कैटलन समानता कानून 2020' के तहत महिलाओं को सार्वजनिक रूप से टॉपलेस होकर धूप सेकने की आजादी पहले से है, हालांकि कुछ स्विमिंग पूल के ऑनर्स ने महिलाओं के टॉपलेस होकर नहाने पर रोक लगा रखी थी और, अब वहां ऐसा कानून बनाया गया है कि यदि कोई स्थानीय अधिकारी महिलाओं को टॉपलेस होने से रोकेगा तो उस पर £430,000 का जुर्माना लगाया जा सकता है।

लखनऊ मेट्रो: महिला पायलट ने बनाया कीर्तिमान

आज लड़कियां पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। हर क्षेत्र में वह परचम लहरा रही हैं। इसका ताजा उदाहरण उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (UPMRC) में देखने को मिला है। यूपी मेट्रो की पहली महिला पायलट ने हाल ही में 70 हजार किलोमीटर मेट्रो दौड़ाकर कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। खास बात यह है कि इस दौरान महिला पायलट ने कोई छुट्टी भी नहीं ली। इसके लिए उन्हें 'एंप्लॉय ऑफ द मंथ' से भी सम्मानित किया गया है। दरअसल, प्रयागराज की रहने वाली एकता केसरवानी यूपीएमआरसी में पायलट हैं। एकता कहती हैं कि मेट्रो का परिचालन रेलवे से बिल्कुल अलग होता है। मेट्रो को शहर में ही चलाना होता है। शहरों में छोटे-छोटे स्टेशन होते हैं। ऐसे में बहुत चौकन्ना रहता होता है।

हजारों महिला समर्थकों के प्रदर्शन के बाद मणिपुर के सीएम ने बदला फैसला - बोले नहीं दूंगा इस्तीफ़ा!

▪ आधी आबादी डेस्क

मणिपुर में 3 मई से जारी हिंसा के बीच शुक्रवार सुबह से खबरें आ रही थीं कि मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह कुर्सी छोड़ने वाले हैं। वे दोपहर 3 बजे राज्यपाल अनुसुइया उइके से मिलकर अपना इस्तीफा सौंप देंगे। हालांकि, अटकलों के बीच सैकड़ों महिलाएं इंफाल में राजभवन के सामने पहुंचीं। महिलाओं ने बीरेन सिंह से इस्तीफा ना देने और हिंसा फैलाने वालों के खिलाफ सख्त एक्शन लेंने की मांग की।

उधर, मुख्यमंत्री ने शाम 4 बजकर 1 मिनट पर ट्विटर पर लिखा- इस मोड़ पर तो मैं इस्तीफा नहीं देने वाला हूं। यानी बीरेन सिंह ने साफ कर दिया कि वे मुख्यमंत्री की कुर्सी नहीं छोड़ रहे। एन बीरेन सिंह का इस्तीफा, जो कटे-फटे हाल में है, सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, एक वरिष्ठ मंत्री ने दावा किया कि मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह शुक्रवार को इस्तीफा देने वाले थे, लेकिन जनता खास कर महिलाओं के दबाव में उन्होंने अपना मन बदल लिया। बीरेन सिंह गवर्नर हाउस के लिए निकल रहे थे, इसी दौरान अपने घर के बाहर महिला समर्थकों के प्रदर्शन को देखने के बाद वे वापस लौट गए।

बीरेन सिंह के घर के बाहर सैकड़ों की संख्या में महिलाओं ने ह्यूमन चेन बनाया और कहा कि वे नहीं चाहती थीं कि उनके मुख्यमंत्री इस्तीफा दें। उनके इस्तीफे की एक कॉपी भी तब फाड़ दी गई, जब दो मंत्री इसे लेकर CM हाउस के बाहर आए और उसे प्रदर्शन कर रही महिलाओं को सौंपा।

इससे पहले मणिपुर के स्थानीय लोगों ने न्यूज एजेंसी एएनआई से कहा था कि हम नहीं चाहते कि सीएम इस्तीफा दें, उन्हें इस्तीफा नहीं देना चाहिए। वह हमारे लिए बहुत काम कर रहे हैं। हम उनको समर्थन दे रहे हैं। हम 2 महीने से उथल-पुथल की स्थिति में हैं। लोगों ने कहा कि हम उस दिन का इंतजार कर रहे हैं जब भारत सरकार और मणिपुर सरकार इस संघर्ष को लोकतांत्रिक तरीके से हल करेगी। ऐसी स्थिति में अगर मणिपुर के मुख्यमंत्री इस्तीफा दे देते हैं, तो लोग यहां कैसे रहेंगे?

नई दिल्ली में रही 'दोस्त पुलिस अवॉर्ड' की धूम, महिला अधिकारी भी सम्मानित

▪ आधी आबादी डेस्क

भारतीय पुलिस के अधिकारियों व कर्मियों के सम्मान में बीते रविवार यानी 25 जून 2023 को श्रीराम सेन्टर मण्डी हाउस नई दिल्ली में 'दोस्त पुलिस अवॉर्ड' नाम से एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। यह आयोजन 2001 से दिल्ली से प्रकाशित 'दोस्त पुलिस पत्रिका' द्वारा सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि और पद्म श्री से सम्मानित विश्वविख्यात कवि श्री अशोक चक्रधर ने इस मौके पर विजेताओं को दोस्त पुलिस अवॉर्ड देकर सम्मानित किया। साथ ही इस अवसर पर सम्मान पाने वालों के सम्मान में एक कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता अशोक चक्रधर ने की। समारोह का आयोजन दोस्त पुलिस पत्रिका के संपादक विनोद भारती व मुख्य स्तम्भ सर्वश्री राजेश गर्ग, श्री आन्नद गुप्ता, श्री यशपाल बंसल श्री सरदार हरपाल सिंह व दोस्त पुलिस टीम ने किया। सम्मान समारोह का संचालन जाने-माने आरजे और उद्घोषक ओपी राठौड़ साहब ने किया।

दोस्त पुलिस का प्रथम पुरस्कार श्री पवन जैन (आई पी एस) महानिदेशक मध्य प्रदेश पुलिस को दिया गया। साथ ही डॉ . एल. आर. बिश्नोई पुलिस महानिदेशक मेघालय, पूर्व पुलिस अधिकारियों सर्व श्री मुकेश मीना (आई पी एस) पूर्व डी जी पी गोवा श्री सुनील गर्ग (आई पी एस) पूर्व स्पेशल पुलिस कमिश्नर दिल्ली, श्री संजय सिंह (आई पी एस) स्पेशल पुलिस कमिश्नर दिल्ली, श्री संजय कुमार ए डी जी पी चैन्नई, श्री संजय कुमार चौधरीआई जी आई टी बी पी 'डा० राजश्री सिंह (आई पी एस) आई जी क्राईम गुरुग्राम हरियाणा ,श्री चिन्मय बिरवाल अति. पुलिस आयुक्त पश्चिमी दिल्ली रेंज. श्रीमति चन्दन चौधरी डी सी पी . साऊथ दिल्ली.श्री घनश्याम बंसल (आई पी एस) वित्तीय सलाहकार ,उपसचिव एन सी एल ए टी . श्री एल. एन. राव. पूर्व डी सी पी दिल्ली, चो० मदन मोहन समर डी एस पी. मध्यप्रदेश पुलिस, श्री अरुण शर्मा ए सी पी दिल्ली श्री राजकुमार ए सी पी . क्राइम (वेस्ट दिल्ली) श्री वी. के. एस. यादव ए सी पी सफदर जंग श्री मनोन मुदगल, आई एन एस पी . पुलिस मुख्यालय, श्री रईसुद्दीन सब इंस्पेक्टर दिल्ली पुलिस श्रीमति कोटरू श्रीशा सब इंस्पेक्टर आन्ध्र प्रदेश पुलिस, श्रीमति सीमा ढाका, ए एस आई दिल्ली पुलिस श्रीमति ज्योति वाधवार सहित देशभर से आये दर्जनों पुलिस अधिकारियों को सम्मानित किया।

सर्राफा बाज़ार

22 कैरेट सोना	चांदी
₹55,150	₹71,900
प्रति 10 ग्राम	प्रति किलो

सत्यप्रेम की कथा: कमजोर स्क्रीनप्ले को मिला कार्तिक-कियारा की बेहतरीन अदाकारी का साथ

▪ प्रियंका सिंह

इस साल शहजादा के बाद यह कार्तिक आर्यन की दूसरी फिल्म है, जो सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। फिल्म की कहानी शुरू होती है सत्यप्रेम (कार्तिक आर्यन) के सपने के साथ, जिसमें वह शादी के ख्वाब सजा रहा है। सपना टूटता है, जब उसके पिता नारायण (गजराज राव) उसे घर के काम करने के लिए उठाते हैं। वकालत की परीक्षा में फेल हो चुका सत्यप्रेम बेरोजगार है, इसलिए उसे घर के काम करने पड़ते हैं। उसकी मां (सुप्रिया पाठक) गरबा सिखाकर और बहन सेजल (शिखा तल्सानिया) जुम्बा की क्लासेस लेकर घर का खर्च चलाते हैं। सत्यप्रेम शादी करना चाहता है, लेकिन उसे लड़की नहीं मिल रही है।

कहानी एक साल पीछे जाती है, जहां गरबा में उसे कथा (कियारा आडवाणी) से पहली नजर में प्यार हो गया था, लेकिन कथा किसी और से प्यार करती थी, इसलिए बात वहीं खत्म हो गई थी। कहानी वर्तमान में आती है, जहां सत्यप्रेम को पता चलता है कि अब कथा सिंगल है। परिस्थितियां ऐसी हो जाती हैं कि सत्यप्रेम और कथा की शादी हो जाती है। कथा का एक राज है, जिसका खुलासा शादी के बाद होता है।

भले ही फिल्म को म्यूजिकल रोमांटिक ड्रामा जॉनर में रखा गया है, लेकिन इसका विषय संजीदा है। एक रिश्ते में सहमति कितनी मायने रखती है, इस पर बात की गई है। हालांकि, उस मुद्दे तक पहुंचने में लेखक करण श्रीकांत शर्मा ने अपनी कहानी में बहुत समय ले लिया। मराठी फिल्मों का निर्देशन कर चुके समीर विद्वांस का निर्देशन कई दृश्यों में कमजोर पड़ जाता है। खासकर फिल्म का पहला हाफ धीमा है। इंटरवल के बाद फिल्म थोड़ी रफ्तार पकड़ती है, क्योंकि कथा के राज से पर्दा उठता है। फिल्म की लंबाई बेवजह के दृश्यों को निकालकर 20-25 मिनट कम की जा सकती थी।

अधूरे लगते हैं कुछ सीन

फिल्म में कई गाने हैं, सीन लंबे और धीमे हैं। सत्यप्रेम वकालत की परीक्षा के लिए फार्म भरता है, लेकिन फिर वह सीन आगे नहीं बढ़ता है। अगर कथा से सत्यप्रेम को पहली नजर में प्यार हो गया था, तो वह किसी और से शादी के लिए उतावला क्यों रहता है? जब उसे पता चलता है कि कथा सिंगल हैं, तो उसे तुरंत कथा से इतना ज्यादा इश्क कैसे हो जाता है?

अभिनय ने फिल्म को बिखरने से बचाया

इन सवालों के बीच कमजोर स्क्रीनप्ले को कार्तिक और कियारा दोनों ही अपने बेहतरीन अदाकारी से संभाल लेते हैं। कार्तिक के मोनोलाग की कमी इस फिल्म में खलेगी, लेकिन एक सच्चे प्रेमी और जिम्मेदार पति की भूमिका में वह विश्वसनीय लगते हैं। रोमांटिक, भावुक, कॉमेडी हर सीन में अपनी छाप छोड़ते हैं। कियारा ने कथा की मनोदशा को आत्मसात किया है। भावुक दृश्यों में वह चौंकाती हैं। गजराज राव और सुप्रिया पाठक ने कहानी के दायरे में रहकर अच्छा काम किया है, हालांकि, आधुनिक विचारों वाले गजराज के किरदार नारायण की सोच अचानक से छोटी क्यों हो जाती है, उसे लेकर भी मन में सवाल रह जाते हैं। शिखा तलसानिया के हिस्से खास दृश्य नहीं आए हैं। लड़की की मर्जी के खिलाफ गए तो सजा पक्की..., अगर सच में जिंदा रहना चाहती हो, तो अपनी लाइफ का हीरो खुद बनना पड़ेगा..., जैसे संवाद दमदार हैं। फिल्म में गाने कई हैं, लेकिन तूने सिखाया है मुझको, कैसे करना है ये इश्क... आज के बाद... और पसूरी... याद रह जाते हैं।

कलाकार- कार्तिक आर्यन, कियारा आडवाणी, गजराज राव, सुप्रिया पाठक, शिखा तलसानिया आदि।
निर्देशक- समीर विद्वांस
अवधि- 146 मिनट
रेटिंग- ढाई

पुस्तक समीक्षा: उपासना की हांड़ी, ज़िंदगी एक स्क्रिप्ट भर से आगे

यूँ तो उपासना के हांड़ी की भाप से पहले भी सामना हुआ है। मगर तब किसी अलग रंग में हुआ था "एक जिंदगी-एक स्क्रिप्ट भर में।" लेखक की सबसे बड़ी उपलब्धि में यही होता है की वो जनमानस से जुड़ जाए अपने पात्रों और कहानियों से। इस पैमाने पर उपासना खरी उतरती हैं। इन दोनों कहानियों में फणीश्वर नाथ रेणु की सी आंचलिकता महसूस होती है। लेखक के अपने समय, बीते हुए समय और भविष्य, तीनों जगह पे जो पारखी नज़र है वो ज़ाहिर होती है। "हर आदमी के अंदर एक शहर था जैसे और हर शहर एक आदमी का चेहरा था" मेरे लिए ये पंक्ति सबसे ख़ास है। एक और बात यहाँ पर कहना गलत न होगा, उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग बहुत समय से कलकत्ता कमाने जाते हैं। सो कलकत्ते का जिक्र बेहद जरुरी हो जाता है। उपासना की कहानियों में उनका वचारिक पस-मंज़र (पृष्ठभूमि) काफ़ी ज़रखेज (अमीर) दिखाई पड़ता है। जितनी सफाई और हक़ीक़त के साथ वो आंचलिकता और देहात के दृश्य को अपने वैचारिक कैनवास पर रखती है वो काबिले तारीफ है। उपासना ने प्यारे से सौरभ जिसकी कोया जैसी आँखे हैं, उसका बड़ा ही प्यारा मंज़र पेश किया है। बच्चे कितने निर्दोष और पवित्र हैं कहानी में दीखता है।

उपासना का वैचारिक कैनवास बहुत विस्तृत सहज और सुकूनदेह है। हालाँकि मैं इस किताब के सबसे जरुरी हिस्से पे अब आ रहा हूँ। फेमिनिज्म, नारीवाद - हालाँकि ये शब्द बहुत अकादमिक हैं। मगर यदि आप इसको धरातल पर यथार्थ में देखना चाहें तो उपासना की इस किताब की अधिकतर कहानियों में बेहद साफ और मजबूती से दिखाई देता देता है। उपासना के पात्र बंधन को तोड़ के बहार आना चाहती हैं, उनके अंदर कुलबुलाहट दिखाई देती है। उनमें समकालीन हिचक है, मगर वो अपना सही गलत पहचानती हैं। महिला पात्रों में एक जरुरी जिजीविषा है, जो कि संघर्ष के लिए एक केंद्रीय शक्ति है। लेखक का कर्त्तव्य है की वो अपने समाज की समस्याओं पर साफ नज़र रखे। उपासना बेहद संवेदनशीलता के साथ अपने कर्त्तव्य को निभा पाई हैं। उपासना की सबसे बड़ी उपलब्धि मेरी नज़र में पाठक से जुड़ना है।

किताब - दरिया बंदर कोट
लेखिका - उपासना
प्रकाशन - हिन्द-युग्म
समीक्षक - कृष्णमणि मिश्रा, गोरखपुर

प्रबंध संपादक: दिनेश के सिंह ❁ संपादक: हीरेन्द्र झा-निमिषा दीक्षित ❁ सलाहकार संपादक: चारुल मल्लिक, राजेश शर्मा, गीता सिंह ❁ डिज़ाइनर: मो. हसमतुल्लाह अंसारी

RNI-DELHIN/2013/51353